रजि. नं. पी.बी./जे.एल-/0011/2012-14 RNI No. 26281/74

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष–74, अंक : 16, 13-16 जुलाई 2017 तदनुसार 1 श्रावण सम्वत् 2074 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

स्वप्न और उससे बचाव

–ले० स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

यत्स्वप्ने अन्नमश्नामि न प्रातरधिगम्यते।
सर्वं तदस्तु मे शिवं नहि तद् दृश्यते दिवा।।
–अथर्व० ७।१०१।१

पर्यावर्ते दुःष्वप्न्यात्पापात्स्वप्न्यादभूत्याः।
ब्रह्माहमन्तरं कृण्वे परा स्वप्नमुखाः शुचः।।
–अथर्व० ७।१००।१

शब्दार्थ–यत् = जो **अन्नम्** = अन्न **स्वप्ने** = स्वप्न में **अश्नामि** = खाता हूँ, वह **प्रातः** = प्रातः काल [जागने पर] **नः** = नहीं **अधिगम्यते** = प्राप्त होता, **तद्** = वह दिवा = दिन में जाग्रत दशा में **नाहि** = नहीं **दृश्यते**= दीखता, **अतः तत्** = वह **सर्वम्** = सब **मे** = मेरे लिए **शिवम्** = सुखदायी **अस्तु** = होवे।। **दुः+स्वप्रयात्** = दुःस्वप्न से होने वाले **पापात्** = पाप से तथा **स्वप्नयात्** = स्वप्न से होने वाली **अभिभूत्याः** = अभिभूति, दबाव, तिरस्कार से मैं **पर्य्यावर्त्ते** = लौटता और लौटाता हूँ, **अहम्** = मैं **ब्रह्म** = ब्रह्म को **अन्तरम्** = बीच में **कृण्वे** = करता हूँ, इससे मैं **स्वप्नमुखाः** = स्वप्नादि **शुचः** = शोक को **परा** = दूर करता हूँ।

व्याख्या–तीन अवस्थाएँ जाग्रत्, स्वप्न और सुषप्ति प्रत्येक मनुष्य पर आती हैं। जब सभी इन्द्रियाँ–आँख, नाक, कान आदि अपना–अपना कार्य कर रही हैं, उस अवस्था को जाग्रत् कहते हैं। साधारणतया जीव उस समय बहिर्मुख होता है, तभी बाहर के विषयों का ज्ञान होता है। जिस अवस्था में बाह्य इन्द्रियों ने कार्य करना छोड़ दिया है, किन्तु अन्तरिन्द्रिय–मन–ने कार्य नहीं छोड़ा, उस अवस्था को स्वप्न कहते हैं, इस अवस्था में बहुत बेजोड़ विचार सामने आते हैं। जिस अवस्था में मन भी विश्राम लेने लगता है, कोई इन्द्रिय कार्य नहीं कर रही होती, उस अवस्था को सुषुप्ति या गहरी नींद कहते हैं। उस समय आत्मा का बाह्य विषयों से सम्बन्ध न होकर अज्ञात रूप से परमात्मा से सम्बन्ध होता है। यहाँ स्वप्न और दुःस्वप्न का, तथा उनसे होने वाले अनिष्ट और उनसे बचने के उपाय का वर्णन है। '**यत्स्वप्ने अन्नमश्नामि**' में स्वप्न का बहुत सुन्दर लक्षण–सा कर दिया है। स्वप्न में प्राप्त पदार्थ जाग्रत् में कभी उपलब्ध नहीं होता। कभी–कभी अनिष्ट स्वप्न दिखाई देते हैं, डरावने और भयानक सपने आने से मनुष्य के मन पर कुप्रभाव भी पड़ता है, अतः प्रार्थना की–'**सर्वं तदस्तु मे शिवम्**' = वह सब मेरे लिए भला हो। मैं ऐसा कोई स्वप्न न देखूँ जिससे मेरा किसी प्रकार अनिष्ट या अमङ्गल हो।

बुरे स्वप्न आने से बहुधा शरीर की हानि भी हुआ करती है। लोक उसकी दवाइयाँ खाकर चिकित्सा करते हैं, किन्तु उससे लाभ नहीं होता। वेद उसकी चिकित्सा बतलाता है–'**ब्रह्माहमन्तरं कृण्वे परा स्वप्नमुखाः शुचः** = मैं ब्रह्म को बीच में करता हूँ और इस प्रकार स्वप्न आदि शोक को दूर करता हूँ, अर्थात् ब्रह्म–चिन्तन से दुःस्वप्न नष्ट होते हैं। अनुभवियों के अग्रगण्य दयानन्दजी इस विषय में उपदेश करते हैं–''जितेन्द्रिय बनने के अभिलाषी को रात–दिन प्रणव का जाप करना चाहिए। रात को यदि जाप करते हुए आलस्य आदि बहुत बढ़ जाए तो दो घण्टाभर निद्रा लेकर उठ बैठे और पवित्र प्रणव [ओम्] का जाप करना आरम्भ कर दे। बहुत सोने से स्वप्न अधिक आने लगते हैं, ये जितेन्द्रियजन के लिए अनिष्ट हैं।'' मन को ब्रह्म में लगा दो, विषयों से हट जाएगा, फिर विषयों के स्वप्न भी न दिखाएगा। **(स्वाध्याय संदोह से साभार)**

वैदिक भारत–कौशल भारत

आर्य महासम्मेलन 5 नवम्बर को नवांशहर में

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के तत्वावधान में आगामी आर्य महासम्मेलन वैदिक भारत–कौशल भारत **5 नवम्बर 2017** रविवार को नवांशहर में करने का निश्चय किया गया है। इस अवसर पर उच्चकोटि के वैदिक विद्वान् वक्ता, सन्यासी, संगीतज्ञ एवं नेतागण पधारेंगे। कार्यक्रम की विस्तृत सूचना समय–समय पर आपको आर्य मर्यादा साप्ताहिक द्वारा मिलती रहेगी। इसलिए 5 नवम्बर 2017 की तिथि को कोई कार्यक्रम न रखकर पंजाब की सभी आर्य समाजें अधिक से अधिक संख्या में नवांशहर में पहुंच कर अपने संगठन का परिचय दें।

–प्रेम भारद्वाज
महामन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

श्रावणी पर्व

-ले० मनमोहन कुमार आर्य, 196 चुक्खूवाला-2 देहरादून-248001

भारत में श्रावण मास की पूर्णिमा को श्रावणी पर्व के रूप में मनाने की प्राचीन परम्परा है। यह पर्व आर्य पर्व है जिसमें वैदिक धर्म व संस्कृति के संवर्धन व उन्नयन का रहस्य विद्यमान है। श्रावण मास वर्षा ऋतु का मास होता है। इस माह में प्रायः प्रतिदिन अथवा अधिकांश दिनों में देश के अधिकांश भागों में वर्षा होती है जिससे नदियों का जल स्तर बढ़ जाता है और अनेक स्थान बाढ़ की चपेट में आ जाते हैं। वर्षा ऋतु में सड़क मार्ग से एक स्थान से दूसरे स्थान पर आने जाने में बाधायें भी आती हैं। देश ने विगत एक शताब्दी में उससे पूर्व शताब्दियों की तुलना में सभी क्षेत्रों में आशातीत प्रगति की है। अब पूर्व काल के समान वर्षा ऋतु लोगों को पीड़ित नहीं करती न कष्ट ही देती है। नगरों में अच्छी सड़कें हैं, समृद्ध लोगों के पास कारें आदि हैं, वर्षा ऋतु में भी बसें व अन्य वाहन चलते हैं। अतः लोग वर्षा में अन्य दिनों की भांति ही कार्य करते हैं। यह बात अलग है कि पैदल व दो पहियां वाहनों वाले लोगों को आवगमन में कठिनाईयां होती हैं। अधिक वर्षा से नदियों का जल स्तर बढ़ जाने से अनेक स्थानों पर बाढ़ व जल भराव की स्थिति बनती है जिससे जन जीवन अस्त व्यस्त भी होता है।

अतः आधुनिक समय में भी जहां सभी क्षेत्रों में प्रगति हुई है, वहीं जन जीवन में बाधक प्राकृतिक घटनाओं पर पूर्ण नियंत्रण नहीं पाया जा सकता है। अतः प्राचीन काल में श्रावण मास में वर्षा के कारण लोग कार्यों से अवकाश रखते थे और घर में रहकर वेदों व वेद व्याख्या विषयक ग्रन्थों का स्वाध्याय कर आध्यात्मिक व अन्य विषयों पर अपना ज्ञान बढ़ाते थे।

प्राचीन काल में आज की तरह सभी ग्रन्थ मुद्रित रूप में सबको सुलभ नहीं थे। अतः लोग निकट-वर्ती आश्रमों में जाकर रहते थे और वहां रहने वाले वेदज्ञ विद्वानों से जीवन के उत्थान से संबंधित उपदेशों का श्रवण करते थे। ऐसा करने से ही श्रावण मास व इसकी पूर्णिमा के दिन मनायें जाने वाला श्रावणी-पर्व सार्थक होता था। समय के साथ-साथ लोगों में आलस्य व प्रमाद बढ़ने के कारण हमारे ब्राह्मणों व इतर वर्णों में वेदों के अध्ययन के प्रति रूचि कम होती गई और श्रावण मास के स्वाध्याय पर्व का स्वरूप विकृत होकर रक्षा बन्धन पर्व इसका रूप बन गया। इस पर्व का रक्षा बन्धन रूप भी इस दृष्टि से सार्थक होता है कि हम ऋषियों व वेदज्ञ योगियों के आश्रमों में जाकर, उनसे ज्ञान प्राप्त कर, अपने जीवन की रक्षा करें। इसके लिए वेदों का ईश्वर, जीवात्मा व सृष्टि विषयक यथार्थ ज्ञान व उनका आचरण आवश्यक है। ऐसा करने से अविद्या का नाश व विद्या की वृद्धि सम्भव होती है। प्राचीन काल में चातुर्मास वा श्रावण मास में वेदाध्याय व वेदों के स्वाध्याय का कुछ ऐसा ही स्वरूप प्रतीत होता है। कालान्तर में श्रावणी पर्व का यह स्वरूप भी नहीं रहा और इसका विकृत रूप बहिनों द्वारा अपने भाईयों व राजस्थान के वीर राजपूतों की कलाईयों पर रक्षा सूत्र बांधने ने ले लिया जिससे आवश्यकता पड़ने पर वह उनकी रक्षा कर सकें। इसका एक कारण यही प्रतीत होता है कि मुस्लिम शासन काल में जब नारियों पर अत्याचार व उनके अपमान की घटनायें होने लगीं तो बहिनें अपने भाईयों व समाज के वीर पुरुषों को भाई बनाकर उन्हें रक्षा सूत्र बांधती थी। अतः अतीत में इस पर्व के अवसर पर वेदों के स्वाध्याय सहित अनेक परम्परायें जुड़ गईं और समय के साथ रक्षा बन्धन आदि का स्वरूप बदलने से वर्तमान परिस्थितियों में इसकी उपयोगिता भी कम व नगण्य सी रह गई है। जहां तक वेदों के स्वाध्याय व उसके अनुरूप आचरण का प्रश्न है, वह जितना पहले कभी उपयोगी था उतना ही आज भी है और आगे भी रहेगा।

श्रावणी पर्व वेदों के स्वाध्याय का पर्व है जिसे ऋषि तर्पण नाम भी दिया जाता है। ऋषि तर्पण का अर्थ ऋषियों को सन्तुष्ट करना व उनके ऋण से उऋण होना है। ऋषियों की प्रिय वस्तु वेदों का ज्ञान है जिसकी प्राप्ति वेदोपदेश ग्रहण करने व वेदों के स्वाध्याय से होती है। वेदों की रक्षा मानव जाति के अस्तित्व की रक्षा के समान महत्वपूर्ण है। अतः वेदों का संवर्धन व उसका अधिकार प्रचार आवश्यक व अनिवार्य है। जो गृहस्थ व व्यक्ति वेदों के ज्ञान की प्राप्ति में स्वाध्याय आदि कार्यों में लगा है वह ऋषियों का प्रिय होता है। आजकल भी देखते हैं कि विद्यालय के अध्यापक उस विद्यार्थी को पसन्द करते हैं जो अधिक अध्ययनशील, चिन्तन, मननशील व अनुशासित होता है और जिसे पाठ्यक्रम का पूर्ण व अधिकांश ज्ञान होता है। अतः ऋषियों को सन्तुष्ट करने वा उनके ऋण से उऋण होने का एकमात्र उपाय यही है कि हम उपलब्ध वेद ज्ञान को बढ़ायें, उसका अध्ययन कर उससे अलंकृत हों, दूसरों में अधिकाधिक उसका प्रचार व प्रसार करें जिससे वेदों का उपलब्ध ज्ञान अप्रवृत्त होकर नाश को प्राप्त न हो।

हमने देखा है कि मध्यकाल में वेदों का ज्ञान प्रायः पूरी तरह से अप्रवृत्त हो गया था जिससे देश व संसार में अज्ञान का अन्धकार फैल गया। अविद्याजन्य मत-मतान्तर उत्पन्न हो गये जो आज भी समाप्त होने का नाम नहीं ले रहे हैं। आज भी लोगों में सत्य ज्ञान के प्रति प्रवृत्ति जागृत नहीं हो सकी है। यह आज के समय का सबसे बड़ा आश्चर्य है कि मनुष्यों में सत्य ज्ञान की प्राप्ति व उसके अभ्यास की प्रवृत्ति नहीं है। इसका परिणाम मनुष्य व देशवासियों को दुःख के अतिरिक्त अन्य कुछ होने वाला नहीं है। इसे ऋषि दयानन्द ने अपने ग्रन्थों में अच्छी तरह से समझाया है। वेद ज्ञान दुःखों से मुक्ति का कारण है।

यदि वेद ज्ञान से शून्य होंगे तो हमारे आत्मिक व शारीरिक दुःख दूर नहीं होंगे। जब तक मुक्त नहीं होंगे, भिन्न-भिन्न योनियों में बार-बार हमारा जन्म होता रहेगा। अतः वेदों व वेदों के व्याख्या ग्रन्थों का स्वाध्याय व उनका जीवन में आचरण ही ऋषि तर्पण है। यह ऋषि तर्पण इसलिए कहलाता है कि इससे हम ऋषि ऋण से मुक्त होते हैं। वेदों का स्वाध्याय व अध्ययन जितना अधिक होगा उतना वैदिक धर्म व संस्कृति उन्नत व समृद्ध होगी। स्वाध्याय वा ऋषि तर्पण का यह क्रम लगभग साढ़े चार मास चलता है जिसका आरम्भ उपाकर्म से और समापन उत्सर्जन से होता है। इस विषय में अधिक जानने के लिए आर्य विद्वान पं. भवानी प्रसाद लिखित 'आर्य पर्व पद्धति' का अध्ययन आवश्यक है। वेद और यज्ञ का परस्पर गहरा सम्बन्ध है। सभी यज्ञ वेद मन्त्रों के पाठ व वेद मंत्रों में निहित विधियों के द्वारा ही होते हैं। अतः श्रावण मास में यज्ञों को नियम पूर्वक करना चाहिये। यज्ञ से हानिकारक किटाणुओं का नाश होता है। वायु की दुर्गन्ध का नाश होकर वायु सुगन्धित हो जाती है जो स्वास्थ्य के लिए लाभदायक होती है। अनेक प्रकार के रोग नियमित यज्ञ करने से दूर हो जाते हैं और यज्ञ करने से अधिकांश साध्य व असाध्य रोगों से बचाव भी होता है। यज्ञ के प्रभाव से निवास स्थान व घर के भीतर की वायु यज्ञाग्नि की गर्मी से हल्की होकर बाहर चली जाती है और बाहर की शीतल व शुद्ध वायु घर के भीतर प्रवेश करती है जो स्वास्थ्यप्रद होती है। वायु में गोघृत व वनौषधियों सहित मिष्ट व पुष्टिकारक पदार्थों की आहुतियां देने से उस वायु का लाभ न केवल यज्ञकर्ता को होता है अपितु वह वायु दूर-दूर तक जाकर असंख्य लोगों को लाभ पहुंचाती है। जितने लोग लाभान्वित होते हैं उसका पुण्य भी यज्ञकर्ता को मिलता है। यज्ञ में वेदमन्त्रों को बोलकर आहुतियां देने से मन्त्र में निहित ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना व उपासना सहित उसके अर्थों को जानकर उसके अनेक आध्यात्मिक व भौतिक लाभ भी यज्ञ करने वाले मनुष्य को प्राप्त होते हैं। इससे वेदों की रक्षा भी होती है। इसी कारण वैदिक धर्म में

(शेष पृष्ठ 7 पर)

सम्पादकीय......

सच्चे गुरू का सच्चा शिष्य

हमारा देश प्राचीन काल से ऋषि-मुनियों और गुरूओं का देश रहा है। समय-समय पर इस देश में ऐसे गुरू और शिष्य हुए हैं जिनके कारण हमारा देश विश्वगुरू कहलाता था। गुरू शिष्य परम्परा के द्वारा हमारा देश जहां आध्यात्मिक रूप से सम्पन्न था वहीं पर राजाओं के धार्मिक और चरित्रवान होने से भौतिक रूप में भी सोने की चिड़िया कहलाता था। भारत में गुरू शिष्य सम्बन्ध की अद्‌भुत परम्परा रही है। आज का शिष्य विद्यालयों में फीस देता है और शिक्षा ग्रहण करता है, परन्तु भारत की प्राचीन गुरूकुल पद्धति में शिष्य से कोई फीस नहीं ली जाती थी। भिक्षा द्वारा अन्नादि लाकर दैनिक आवश्यकताओं को पूरा किया जाता था। शिक्षा समाप्ति पर अपने सामर्थ्य के आधार पर और गुरू की आवश्यकतानुसार स्वयं ही निर्णय लेकर गुरू के चरणों में अपनी श्रद्धा के अनुसार कोई वस्तु अर्पण करते थे। उसे गुरू दक्षिणा के रूप में जाना जाता था।

इसी परम्परा का निर्वाह करते हुए स्वामी दयानन्द ने अपने गुरू स्वामी विरजानन्द को दक्षिणा देने का निश्चय किया। गुरू दक्षिणा के रूप में दी जाने वाली वस्तु द्वारा गुरू की प्रसन्नता की इच्छा शिष्य के हृदय में हुआ करती है। स्वामी दयानन्द के पास कोई पार्थिव सम्पत्ति तो थी नहीं। अपनी दैनिक आवश्यकता के लिए वे स्वयं दूसरों के उपर निर्भर थे। किसी तरह भिक्षा के रूप में स्वामी विरजानन्द की प्रिय वस्तु लौंग एक थाली में सजाकर अत्यन्त श्रद्धा और भक्ति से आप्लावित होकर, बाल ब्रह्मचारी स्वामी दयानन्द ने उसे गुरू चरणों में अर्पित किया। लौंग की सुगन्ध कमरे को सुगन्धित कर रही थी। गुरू विरजानन्द प्रज्ञाचक्षु थे परन्तु सुगन्ध से पहचान लिया और दयानन्द से बोले- वत्स दयानन्द! क्या लाए हो? स्वामी दयानन्द ने निश्छल आनन्द से मुदित होकर कहा-गुरूजी, थोड़ी सी लौंग है। इस पर गुरू विरजानन्द जी ने कुछ पल रूककर गम्भीर भाव से कहा- दयानन्द मैं तुम्हारी गुरू भक्ति और श्रद्धा को समझता हूं परन्तु मैं तुमसे कुछ और चाहता हूं। गुरू के ऐसा कहने पर स्वामी दयानन्द की बड़ी विचित्र अवस्था थी। गुरू को प्रसन्न करने के लिए बड़ी मुश्किल से कुछ लौंग माँगकर लाया था परन्तु गुरूजी मुझसे कौन सी चीज चाहते हैं। इस कल्पना से कि गुरूजी कौन सी वस्तु मांग लेंगे, स्वामी दयानन्द अपने शारीरिक सामर्थ्य, बौद्धिक प्रतिभा और व्यवहारिक दक्षता के लिए अपने आपको दृढ़ता धारण करने का प्रयास कर रहे थे। शिष्य दयानन्द बड़ी श्रद्धा के साथ गुरू विरजानन्द जी के सामने नतमस्तक होकर निवेदन करते हैं कि गुरूजी आप आदेश दीजीए मैं अपना जीवन अर्पण करके भी उसे पूरा करने का प्रयास करूंगा।

स्वामी दयानन्द के निवेदन पर गुरू विरजानन्द अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए कहते हैं-देखों दयानन्द! भारत ही नहीं, विश्व भर का मानव अज्ञान अविद्या के अन्धकार में डूबकर बहुत कष्ट को प्राप्त हो रहे हैं, उसे सुखी देखना चाहता हूं। वे अपनी कुरीतियों, कुप्रथाओं, की बेड़ियां तोड़कर ज्ञान और विद्या के प्रकाश में प्रकाशित हों। वे सत्य-असत्य, नित्य-अनित्य, सुख-दुख, राग-द्वेष के प्रति विवेक ज्ञान प्राप्त कर लें और नित्यानन्द में आनन्दित रहें। आज संसार सत्य विद्या का प्रचार करने वाले वेद ज्ञान को भूल चुका है, मत-मतान्तरों, सम्प्रदाय और एक ईश्वर की पूजा के स्थान पर अपने-अपने ईश्वर बना बैठा है, मूर्तिपूजा दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। संसार के मानव मात्र को वेद ज्ञान रूपी सूर्य की किरणों का प्रकाश तुम्हीं दे सकते हो। मानव की उन्नति के साथ ही जीव मात्र की स्थावर जंगम की उन्नति आश्रित है। मैं चाहता हूं कि जो विद्या आज तक तुमने अर्जित की है, उसका प्रसार संसार भर में जीवमात्र के कल्याण के लिए करो। इतना कहकर गुरू विरजानन्द चुप हो गए।

गुरू विरजानन्द की वाणी के साथ-साथ महर्षि दयानन्द के चेहरे के भाव भी बदलते जा रहे थे और वे जिस परीक्षा के लिए अपने आपको तैयार कर रहे थे, अब उसकी आवश्यकता नहीं थी। गुरू विरजानन्द को अपनी प्रदत्त विद्या के लुप्त हो जाने का भय तथा चिन्ता व्याप्त थी। कितने ही शिष्यों को उन्होंने पढाया? कोई शिष्य दयानन्द के समान मेधावी, पूर्ण शुद्ध ब्रह्मचारी एवं परहित चिन्ता व्यग्र नहीं मिला। इसे सच्चे शिव की खोज थी, वह इसने पा लिया है। समाधि में उस नित्य, शुद्ध, पवित्र, आनन्दमय, ज्ञान स्वरूप के सानिध्य में परम पवित्र ज्ञान का प्रसाद भी पा चुका है। वह संसारिक चिन्ताओं से विरक्त, स्थिर समाधि में आनन्दमग्न हो गया तो इस सत्य विद्या का प्रकाश इस संसार में कौन फैलाएगा? क्या यह दीपक अपने प्रकाश से स्वयं ही प्रकाशित रहेगा? संसार के दुःखी जीवमात्र को इस अन्धकार से कौन निकालेगा? अपनी आशाओं को मूर्तरूप देने में समर्थ, इस दयानन्द को वेद सूर्य का प्रकाश करने में लगाने का निश्चय कर गुरू जी ने दक्षिणा के रूप में प्रस्ताव दिया।

स्वामी दयानन्द पुलकित होकर गुरू के चरणों में गिर पड़े। गुरू उससे वही संकल्प करा रहे थे जिसका उन्होंने स्वयं संकल्प लिया था। मानो स्वामी दयानन्द प्रसन्न होकर जैसे इन पक्तियों में कह रहे हो-गुरूदेव प्रतिज्ञा है मेरी पूरी करके दिखला दूंगा, वैदिक धर्म की बलिवेदी पर जीवन भेंट चढा दूंगा। तब गुरू विरजानन्द ने गद्-गद् हो कर आशीर्वाद दिया।

स्वामी दयानन्द ने गुरू दक्षिण को चुकाते-चुकाते, सत्य विद्या का प्रचार-प्रसार करने, सत्य को ग्रहण और असत्य के त्यागने में सदा उद्यत, प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार व्यवहार करने, एक ही ईश्वर के सत्य स्वरूप की स्थापना करने, अपनी उन्नति में ही सन्तुष्ट न रहकर सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझने, मन-वचन-कर्म से एकनिष्ठ सत्यवादी दयानन्द ने अनेंकों कष्टों को सहा, विष पान किया, परन्तु कभी भी डगमगाया नहीं। संसार को वेद का सत्य ज्ञान दिया। वेदों के सत्यार्थ प्रकाश के कारण अनुपमेय विद्या बल बुद्धि से प्रदीप्त होकर महर्षि कहलाया । महान् गुरू के महान् शिष्य की अद्‌भुत दक्षिणा को अपने जीवन में धारण करके संसार भर के कल्याण की भावना को लेकर यदि हम कार्य करें तो अपने उद्देश्य में सफल हो सकते हैं।

गुरू पूर्णिमा का पर्व हमें ऐसे सच्चे गुरूओं का स्मरण कराता है जो लोगों का मार्गदर्शन करते हैं, उनके लिए प्रेरणा का स्रोत बनते हैं। जिस प्रकार गुरु विरजानन्द ने महर्षि दयानन्द जैसे शिष्य का निर्माण करके राष्ट्र को एक नई दिशा दी थी। वर्तमान में जिस प्रकार के तथाकथित धर्मगुरूओं की बाढ़ सी आ गई है, उससे भी सावधान होने की आवश्यकता है। ये तथाकथित गुरू अपने स्वार्थ के लिए लोगों की भावनाओं और गुरूओं के प्रति श्रद्धा से खिलवाड़ करते हैं। इसलिए गुरू ऐसा होना चाहिए जो अपने शिष्यों को सच्चा मार्ग दिखा सके और उनके जीवन का निर्माण कर सके। ऐसे सच्चे गुरूओं और सच्चे शिष्यों के द्वारा ही हम पुनः विश्वगुरू की पदवी को प्राप्त कर सकते हैं।

प्रेम भारद्वाज
संपादक एवं सभा महामन्त्री

गऊ हत्या-राष्ट्र हत्या

-पं० नन्दलाल निर्भय पत्रकार आर्य सदन बहीन, जनपद पलवल (हरियाणा),

भारत ऋषियों-मुनियों की पावन धरती है जो संसार का गुरु रहा है। यह राम-कृष्ण का देश है। जब तक भारत भूमि पर गौ हत्या जारी रहेगी, हमारा देश अशांत रहेगा। इसकी अशांति स्वप्न में भी दूर नहीं हो सकती। क्योंकि इस राष्ट्र के लोगों को पता ही नहीं कि एक अकेली गाय का आर्तना सौ-सौ योजन तक भूमि को शमशान बना देता है। महात्मा गांधी का नाम लेकर हर दो अक्तूबर और 30 जनवरी को राजघाट पर बापू के नाम पर ढोंग करने वाले लोग चाहते तो उनका स्वप्न पूरा कर सकते थे लेकिन तथाकथित धर्म निरपेक्षता के चलते उन्होंने ऐसा नहीं किया। बापू ने कहा था- ''गौवध को रोकने का प्रश्न मेरी नज़र में भारत की स्वतत्रता से अधिक महत्त्वपूर्ण है।'' लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने घोषणा की थी कि भारत के आजाद होने पर गौ-हत्या का कलंक कलम की एक नोंक से दूर कर दिया जाएगा। जगतगुरु महर्षि दयानन्द सरस्वती ने तो गो को माता का दर्जा दिया था तथा गौ करुणानिधि पुस्तक की रचना कर गौ का महत्त्व सकल संसार को बता दिया था। इसीलिये यजुर्वेद के प्रथम ही मन्त्र में परमात्मा की आज्ञा है कि (अघ्न्या यजमानस्य पशून् पाहि) हे पुरुष ! तू इन पशुओं को कभी मत मार, और यजमान अर्थात् सब के सुख देने वाले जनों के सम्बन्धी पशुओं की रक्षा कर, जिन से तेरी भी पूरी रक्षा होवे। और इसीलिये ब्रह्मा से लेके आज पर्यन्त आर्य लोग पशुओं की हिंसा में पाप और अधर्म समझते थे, और अब भी समझते हैं। और इन की रक्षा में अन्न भी महंगा नहीं होता, क्योंकि दूध आदि के अधिक होने से दरिद्री को भी खान-पान में मिलने पर न्यून ही अन्न खाया जाता है, और अन्न के कम खाने से मल भी कम होता है। मल के न्यून होने से दुर्गन्ध भी न्यून होता है, दुर्गन्ध के स्वल्प होने से वायु और वृष्टिजल की शुद्धि भी विशेष होती है, उस से रोगों की न्यूनता होने से सब को सुख बढ़ता है।

इससे यह ठीक है कि गो आदि पशुओं के नाश होने से राजा और प्रजा का भी नाश हो जाता है, क्योंकि जब पशु न्यून होते हैं, तब दूध आदि पदार्थ और खेती आदि कार्यों की भी घटती होती है। देखो! इसी से जितने मूल्य से जितना दूध और घी आदि पदार्थ तथा बैल आदि पशु ७०० सात सौ वर्ष के पूर्व मिलते थे, उतना दूध, घी और बैल आदि पशु इस समय दशगुणे मूल्य में भी नहीं मिल सकते। क्योंकि ७०० सात सौ वर्ष के पीछे इस देश में गवादि पशुओं को मारने वाले मांसाहारी विदेशी मनुष्य बहुत आ बसे हैं। वे उन सर्वोपकारी पशुओं के हाड़मांस तक भी नहीं छोड़ते, तो **'नष्टे मूले नैव पत्रं न पुष्पम्'** जब कारण का नाश कर दे, तो कार्य नष्ट क्यों न हो जावे ? हे मांसाहारियों ! तुम लोग जब कुछ काल के पश्चात् पशु न मिलेंगे, तब मनुष्यों का मांस भी छोड़ोगे वा नहीं ? हे परमेश्वर ! तू क्यों इन पशुओं पर, जो कि बिना अपराध मारे जाते हैं, दया नहीं करता? क्या उन पर तेरी प्रीति नहीं है ? क्या उन के लिये तेरी न्याय सभा बन्द हो गई है ? क्यों उन की पीड़ा छुड़ाने पर ध्यान नहीं देता और उन की पुकार नहीं सुनता ? क्यों इन मांसाहारियों के आत्माओं में दया प्रकाश कर निष्ठुरता, कठोरता, स्वार्थपन और मूर्खता आदि दोषों को दूर नहीं करता ? जिस से ये इन बुरे कामों से बचें।

केन्द्र सरकार के पशु क्रूरता निरोधक अधिनियम के बाद विवाद पैदा हो गया है। पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के जारी किये गये व प्रीवेंशन ऑफ क्रुएलिटी टू एनिमल्स नियम 2017 जारी किए गजट नोटिफिकेशन को लेकर केरल और कुछ दक्षिणी राज्यों में तीव्र प्रतिक्रिया देखने को मिली है। इसी नियम के जरिए केन्द्र सरकार ने बूचड़खानों के लिए मवेशियों की खरीद-फरोख्त पर रोक लगा दी है। सरकार का तर्क है कि बाजार से जानवर खरीदने और बेचने वालों को अब यह बताना होगा कि जानवर को कत्ल करने के लिए नहीं खरीदा जा रहा। केरल में यूथ कांग्रेस नेताओं ने बीफ-बैन के विरोध में बीफ पार्टी का आयोजन किया और उसका वीडियो भी सोशल मीडिया पर डाला।

केरल विद कांग्रेस नाम के एक ट्विटर हैण्डल से कुछ तस्वीरें भी री-ट्वीट की गई हैं। कभी कांग्रेस गाय-बछड़ा चुनाव चिन्ह पर वोट मांगती थी। गाय-बछड़ा चुनाव चिन्ह इतना लोकप्रिय था कि लोग कांग्रेस को ही वोट डालते थे। लेकिन आज के यूथ-कांग्रेसी गाय काटकर व कटवाकर खा रहे हैं। कांग्रेस का चुनाव चिन्ह दो बैलों की जोड़ी भी रहा। उसके सहारे वह सत्ता में रही।

कांग्रेस उपाध्यक्ष राहुल गांधी ने मामले की संवेदनशीलता को समझते हुए ''जो कुछ केरल में हुआ वह मुझे व कांग्रेस पार्टी को बिल्कुल भी स्वीकार नहीं है। यह विचारहीन व बर्बर है, मैं इस घटना की कड़ी निंदा करता हूं।

कांग्रेस उपाध्यक्ष का बयान स्वागत योग्य है। कांग्रेस ने बीफ पार्टी करने वाले नेताओं को पार्टी से निलम्बित कर दिया है। केरल पुलिस ने फिलहाल यूथ कांग्रेस नेताओं के खिलाफ मामला दर्ज कर लिया है। मद्रास के एक कॉलेज में बीफ फेयर का आयोजन किया गया। यह कैसी सियासत है।

यह मुद्दा सिर्फ गाय काटने का नहीं है बल्कि देश के करोड़ों हिन्दुओं की भावनाओं को चुनौती देना है। कांग्रेस ने केरल के यूथ कांग्रेसी नेताओं ने पार्टी से बाहर कर सही कदम उठाया है।

भारतीय संविधान के दिशा-निर्देशक सिद्धान्तों में यह स्पष्ट लिखा हुआ है कि देश में कृषि व पशुधन की बढ़त के लिए आधुनिकतम वैज्ञानिक उपायों को अपनाते हुए गाय व बछड़े के वध को प्रतिबंधित करते हुए अन्य दुधारू व माल ढ़ोने वाले पशुओं के संरक्षण को सुनिश्चित किया जाना चाहिए तो स्वतंत्र भारत में गौवध का सवाल ही कहां पैदा हो सकता है। साथ ही उसके मांस भक्षण का मुद्दा किस प्रकार उठ सकता है। मगर इस मुद्दे पर जिस तरह राजनीति की जा रही है वह केवल उस सच को नकारने की कोशिश है। जिसके प्रतिबिंव हमें सिंधुघाटी की सभ्यता से लेकर आज तक के भारत के जीवन के सत्य को चीख-चीख कर बताते रहे हैं। 1965 के अंत में स्वर्गीय इंदिरा गांधी के शासनकाल में भारत-भर में संतों व साधुओं ने संसद को घेर लिया था। यह आंदोलन गौ-हत्या पर पूर्ण प्रतिबंध लगाने के लिए किया जा रहा था। साधुओं के आन्दोलन पर तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने दबाव देकर गुलजारी लाल नंदा गृह मंत्री भारत द्वारा आदेश दिलाकर और उन पर दबाव डालकर गोली चलवाकर कई हजार साधु-संतों-गौभक्तों की हत्या करा दी थी। अब भी कांग्रेस उसी परम्परा का संदेश दे रही है जो निंदनीय है। भारत की जनता इसे सहन नहीं करेगी।

मैं वर्तमान प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी से आशा करता हूं कि भारत में गौ रक्षा का कानून बनाकर गौ हत्या का कलंक इस देवों की भूमि भारत से मिटाकर सच्चे गौ भक्त होने का प्रमाण देंवे। आने वाले चुनाव में जो लोग गौ-रक्षा का विरोध कर रहे हैं उन दुष्टों का भारत की जनता खात्मा कर देगी तथा अंत में विजय धर्म का पालन करने वाले ईश्वर भक्त धर्मात्माओं की ही होगी। परमात्मा इस देश के नेताओं को सुमति प्रदान करे।

ऋग्वेद में धनार्जन और उसका उपयोग

-ले० शिवनारायण उपाध्याय, 73 शास्त्री नगर दादाबाड़ी, कोटा

सामान्य रूप से यह समझा जाता है ऋग्वेद में धनार्जन को कोई अच्छा कार्य नहीं माना जाता है। वेद में केवल आध्यात्म विद्या की ही प्रशंसा की गई है और उसी का विस्तृत वर्णन भी किया गया है। परन्तु यह धारणा यथार्थ नहीं है। वेद अर्थ की उपेक्षा कैसे कर सकता है जब कि सभी प्राणियों के शरीर प्रकृति के पांच तत्वों आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी से बने हुए है ! दैनिक कर्म से इनका ह्रास होता है, साथ ही शरीर का विकास भी इनके अभाव में असम्भव है और यह सब हमें अर्थ के अभाव में उचित मात्रा में उपलब्ध नहीं हो सकता है ! ऋग्वेद में धन की उपयोगिता, धनार्जन के साधन, आदि पर पर्याप्त वर्णन हुआ है। हम संक्षेप में यह वर्णन पाठकों की जानकारी के लिए यहां दे रहे हैं।

ऐन्द्र सानसिं रयिं सजित्वानम् सदासहम्।
वर्षिष्ठमूतये भर।। ऋ. 1.8.1

पदार्थ-(ऐन्द्र) हे इन्द्रः। आप कृपा करके हमारी (ऊतये) रक्षा, पुष्टि और सब गुणों की प्राप्ति के लिए (वर्षिष्ठम्) जो अच्छी प्रकार वृद्धि करने वाला (सानसिम्) निरन्तर सेवन करने योग्य (सदासहम्) दुष्ट शत्रु तथा हानि अथवा दु:खों को सहने का मुख्य हेतु (सजित्वानम्) तुल्य शत्रुओं पर विजय दिलाने वाला (रयिम्) जो धन है उसका (आ भर) अच्छी प्रकार दीजिये।

भावार्थ-इस मंत्र में धन के उपयोग बतायें गये हैं। धन प्राप्ति के लिए सबसे महत्वपूर्ण साधन विद्या है।

सं गोमदिन्द्र वाजवदस्मे पृथु श्रवो बृहत्।
विश्वायुर्धेह्यक्षितम्।। ऋ. 1.9.7.

पदार्थ-हे (इन्द्र) अनन्त विद्या युक्त सबके धारक परमेश्वर।

आप (अस्मे) हमारे लिए (गोमत्) जो धन श्रेष्ठ वाणी और अच्छे-अच्छे पुरूषों को प्राप्त कराने (वाजवत्) अनन्त प्रकार के अन्नादि पदार्थो को प्राप्त कराने वा (विश्वायु:) पूर्ण सौ वर्ष या अधिक आयु को बढ़ाने (पृथु) अति विस्तृत (बृहत्) अनेक शुभ गुणों से प्रसिद्ध अत्यन्त बड़ा (अक्षितम्) प्रतिदिन बढ़ने वाला (श्रव:) जिसमें अनेक प्रकार की विद्या वा सुवर्ण आदि धन सुनने में आता है उस धन को (संधेहि) अच्छे प्रकार नित्य उपयोग के लिए दीजिये।

अस्मे धेहि श्रवोबृहद्द्युम्नंस-हस्त्रसातमम्।
इन्द्रता रथिनीरिषः।। ऋ. 1.9.8.

पदार्थ-हे (इन्द्र) सर्वेश्वर्यवान परमात्मा। आप (अस्मे) हमारे लिए (सहस्त्रसातकम्) असंख्यात सुखों का मूल (बृहत्) नित्य वृद्धि को प्राप्त होने वाला (द्युम्नम्) प्रकाशमय ज्ञान तथा (श्रव:) पूर्वोक्तधन और (रथिनीरिष:) अनेक रथादि साधन सहित सेनाओं को (धेहि) अच्छे प्रकार दीजिए।

भावार्थ-हे जगदीश्वर। आप कृपा करके अत्यन्त पुरूषार्थ के साथ जिस धन के द्वारा बहुत से सुखों को सिद्ध करने वाली सेना प्राप्त होती है उसको हमें दीजिए।

धन का उपयोग केवल अपने लिए ही न होकर परोपकार में भी होना चाहिए।

अग्ने यजस्व हविषा यजीया-ञ्छुष्टी देष्णमभि गृणीहिराधः।
त्वं ह्यासि रयिपती रयीणां त्वं शुक्रस्यवचसो मनोता।। ऋ. 2.9.4.

पदार्थ-हे (अग्ने) अग्नि के समान तेजस्वी विद्वान्। जिस कारण (त्वं) आप (रयीणाम्) धनादि पदार्थो के बीच (रयिपति:) धनपति और (त्वम्) आप (शुक्रस्य) शुद्ध करने वाले (वचस:) वचन के (मनोता) उत्तमता से बताने वाले (असि) हैं। (हि) इसीलिए (यजीयान्) अत्यन्त यज्ञ कर्ता होते हुए (हविषा) हव्य सामग्री से (यज्ञस्व) यज्ञ कीजिए और (देष्णम्) देने योग्य (राध:) धन को (श्रुष्टी) शीघ्र (अभि गृणीहि) सब ओर से प्रशंसा करो।

भावार्थ-जो धनाढ्य धन से परोपकार करें तो वे सबके प्रिय बन जाते हैं।

उभयं ते न क्षीयते वसव्यं दिवे दिवे जायमानस्य दस्म।
कृधि क्षुमन्तं जरितारमग्ने कृधि पति स्वपत्यस्य रायः।। ऋ. 2.9.5.

पदार्थ-हे (दस्म) पर दु:ख भजन करने वाले और (अग्ने) अग्नि के समान बढ़ने वाले विद्वान्। (दिवे दिवे) प्रतिदिन (जायमानस्य) सिद्ध हुए जिन (ते) आपका (उभयम्) दान और यज्ञ करना दोनों (वसव्यम्) धनों में प्रसिद्ध हुए काम (न) नहीं (क्षीयते) नष्ट होते सो आप (जरितारम्) विद्यादि गुणों की प्रशंसा करने वाले (क्षुमन्तम्) बहुत अन्न वाले को (कृधि) उत्पन्न करो और (स्वपत्यस्य) जिससे उत्तम सन्तान होते उस (राध:) देने योग्य धन को (पतिम्) पालने, रखने वाले को (कृधि कीजिए।

भावार्थ-उन्हीं के कुल से धन नाश नहीं होता जो सुपात्रों के लिए संसार का उपकार करने को देता है।

तं नो दात मरूतो वाजिनं रथ आपानं ब्रह्मचितथद्दिवेदिवे।
इषं स्तोतृभ्यो वृजनेषु कारवे सनिं मेधामरिष्टं दुष्टरं सहः।। ऋ. 2.34.7.

पदार्थ-हे (मरूत:) प्राण वायु के समान प्रिय। तुम (न:) हमारे लिए (तम:) उस समस्त विद्या की स्तुति करने वाले को (दात) देओ (रथे) रथ के निमित्त (वाजिनम्) सुशिक्षित घोड़ों को देओ (दिवे दिवे) प्रतिदिन (चितयत्) चेताते हुए (आपानम्) व्यापक (ब्रह्म) धन वा अन्न को (वृजनेषु) बलों में (स्तोतृभ्य:) सकल विद्याओं के प्रयोजन वेत्ताओं के लिए (इषम्) इष्ट प्रयोजन को (कारवे) करने वाले के लिए (सनिम्) अलग-अलग बढ़ी हुई (मेधाम्) उत्तम बुद्धि को और (अरिष्ट) अविनष्ट (दुष्टरम्) दु:खों को तैरने योग्य (सह:) बल को देओ।

भावार्थ-मनुष्यों को चाहिए कि सदैव सबके लिए सकल विद्या बताने वाले धर्म से संचित किए हुए धन विद्वानों को देने के लिए अन्न, उत्तम प्रज्ञा और पूर्ण बल को जांये। विद्वान् जन निश्चय से याचकों के लिए उन उक्त पदार्थो को निरन्तर देवें।

जन्म के साथ मृत्यु पीछे लगी रहती है इसलिए व्यक्ति को आलस्य को त्याग कर पुरूषार्थ करके धन का संग्रह करना चाहिए। अच्छा मकान भी बनाना चाहिए।

नानौकांसि दुर्यो विश्व मायुर्वितिष्ठते प्रभवः शोको अग्नेः।
ज्येष्ठं माता सूनवे भागमा-धादन्वस्य केतमिषितं सवित्रा।। ऋ. 2.38.5.

पदार्थ-हे मनुष्यों। जहां (नाना) अनेक प्रकार के (दुर्य:) द्वारवान् (ओकांसि) घर है वा जहां (सवित्रा) सूर्य लोक के साथ (अग्ने) बिजली आदि रूप अग्नि से (विश्वम्) समस्त (आयु:) ओषध को (वि तिष्ठते) विशेषता से स्थिर करता है (प्रभव:) उत्पत्ति और (शोक:) मरण भी जहां (अनु अस्य) ओषध को (वि तिष्ठते) विशेषता से स्थिर करता है (प्रभव:) उत्पत्ति और (शोक:) मरण भी जहां (अनु अस्य) अनुकूल इस सन्तान को (इषितम्) इष्ट अभीष्ट चाहे हुए (केतम्) विज्ञान को (आ आधात) अच्छे प्रकार धारण करती उसमें वा इस जगत् में यथावत् बर्ताव करना चाहिए।

भावार्थ-हे मनुष्यों। जो तुम्हारे जन्म हुए तो मरण भी होगा। इस समय के अन्तराल में सब ऋतुओं में सुख देने वाले घरों को बनाकर विद्या वृद्धि के लिए पाठशालाएं बनाकर अपने पुत्र पुत्रियों को विद्या और उत्तम शिक्षा युक्त कर पूर्ण आयु को भोग कर यश का विस्तार करना चाहिए। धन की प्राप्ति के लिए मनुष्य को सदैव यत्न करना चाहिए।

मेद्यन्तुतेवह्नयोयेभिरीयसेऽरिष-ण्यन्वीलयस्वा वनस्पते।
आयूषां धृष्णो अभिगूर्या त्वं नेष्ट्रात्सोमं द्रविणोदः ऋतुभिः।। ऋ. 2.37.3.

पदार्थ-हे (द्रविणोद:) धन के देने और (वनस्पतये) किरण समूह की रक्षा करने वाले (धृष्णो) प्रगल्भ आप जैसे (वह्नय:) पदार्थ पहुंचाने वाले (ते) आपके (सोमम्) ओषध्यादि रस को (मेद्यन्तु) सचिक्कनपने को चाहै वा (येभि:) जिनके साथ आप (ईयसे) प्राप्त होते हो वैसे उनके साथ (अरिषण्यन्) धन की आकांक्षा न करते हुए (बीलयस्व:) स्तुति कीजिए। (अभिगूर्य) और सब ओर से उद्यत कर (आयुय) और मेल कर (नेष्ट्रात्) प्राप्ति से (त्वम्) आप (ऋतुभि:) बसन्तादि ऋतुओं के साथ (सोमम्) ओषधि आदि के रस को (पिब) पिओ।

भावार्थ-किसी को बिना उद्यम के नहीं रहना चाहिए।

इस प्रकार हमने देख लिया है कि वेद में धन का सम्मान है।

महर्षि सत्यार्थ प्रकाश और मैं

-ले० अभिमन्यु कुमार खुल्लर 22, नगर निगम क्वार्टर्स, जीवाजीगंज, लश्कर, ग्वालियर-474001 (म. प्र.)

(गतांक से आगे)

इस कार्य की पूर्ति के लिये जन-जागरण व जन-भागीदारी का सार्थक अभियान, नमक व जंगल-कानून का प्रबल विरोध-जिससे आदिवासियों की अर्थव्यवस्था जुड़ी थी, गौहत्या का प्रबलतम विरोध-क्योंकि देश की अर्थव्यवस्था कृषि से जुड़ी थी-और सदियों से गौवंश मातृवत पूजनीय रहा है।

ब्रिटिश शासन में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की प्रशंसा करने वाले महर्षि दयानन्द ने शांतिमय संघर्ष की बहुत मजबूत आधारशिला रखी। कभी भड़काऊ भाषण नहीं दिए। जनजागरण ही उनका प्रबलतम शस्त्रसिद्ध होने वाला था। इसी परिप्रेक्ष्य को दृष्टिगत रख कर मैं कहना चाहूंगा कि सत्यार्थ प्रकाश केवल धार्मिक ग्रन्थ ही नहीं है, वह एक एतिहासिक शोध परक, ज्ञान विज्ञान से भरपूर दस्तावेज है जिस पर भारत राष्ट्र का निर्माण, महर्षि दयानन्द को अभिप्रेत था। एक जमाना था जब कार्ल मार्क्स के ग्रन्थ 'डास केपिटल' की तुलना में सत्यार्थप्रकाश को रखने में बड़ा गर्व अनुभव किया जाता था। जमाना नेहरु और कम्युनिष्टों का था। शोषक व शोषित के वाभिंद पर आधारित कम्युनिस्ट विचार धारा का ही अन्त हो गया। प्रबलतम पोषक लैनिन व स्टालिन के स्टेच्यु ही हटा दिए गए। महर्षि दयानन्द द्वारा रचित सत्यार्थ प्रकाश वेद आधारित विचारधारा का वाहक है। वेद कालातीत है: वह लुप्त हो सकता है, नष्ट नहीं हो सकता।

थोड़ा इतिहास देखना समीचीन होगा। जिससे ज्ञात हो सके कि अष्टांग योग में समाधिवस्था तक पहुंचा हुआ योगी वेदों का निष्णात ज्ञाता, आदित्य ब्रह्मचारी मात्र 18 वर्ष की अल्प अवधि में, विष दग्ध काया से, उपरोक्त सम्पूर्ण कार्य को उस मुहाने तक पहुंचा दे, जहां से राष्ट्र की स्वंतत्रता और निर्माण का मार्ग प्रशस्त हो सके। 40 वर्ष की आयु (जन्म 1825) में महर्षि दयानन्द 1865 में सक्रिय रूप से कर्मक्षेत्र में उत्तर गए। 12 मार्च 1867 को कुम्भ मेले में 'पाखण्ड खण्डनी' पताका गाड़ दी। 16 नवम्बर 1869 के काशी शास्त्रार्थ ने देश व्यापी ख्याति प्रदान की। वेदोक्त ईश्वर का ज्ञाता, पूर्णरूपेण उसका समर्थक और मूर्तिपूजा का प्रबलतम विरोधी स्थापित कर दिया। 1865 से 1868 तक ग्यारह शास्त्रार्थ मूर्तिपूजा के खण्डन में थे।

डा० भवानीलाल भारतीय की पुस्तक 'मैने ऋषि दयानन्द को देखा' में इमदाद हुसैन का प्रकरण है। महर्षि ने मिर्जापुर (उ.प्र.) में इमदाद हुसैन को बताया था कि उन्हें काशी शास्त्रार्थ 1869 के बाद से 1873 तक तीन बार विष दिया जा चुका था जिससे उनकी काया तीव्र गति से नष्ट हो रही थी। रक्त में मिल जाने पर, यौगिक क्रियाओं से भी विष को नहीं निकाला जा सकता।

1875 में सत्यार्थप्रकाश की रचना हुई और 1875 में ही काकड़वाडी, मुम्बई में आर्यसमाज की स्थापना स्वयं महर्षि के कर-कमलों से हुई। आसन्न मृत्यु की आहट सुन-समझ कर मेरठ में 1880 में वसीयतनामा लिख कर रजिस्टर्ड करवा दिया था। 1882 में महर्षि द्वारा संशोधित सत्यार्थ प्रकाश का द्वितीय संस्करण प्रकाशित हुआ। 30 अक्तूबर 1883 को यह विश्व-वद्य विश्वरत्न, अजमेर की भिनाय कोठी में कार्तिक अमावस्या-दीपावली की संध्या के छः बजे परमपिता परमात्मा की गोद में, चिर-निद्रा में सो गया।

लेकिन सुषुप्ति की एक हजार वर्ष से अधिक गहरी नीद से भारत की आत्मा को जगा दिया। समस्त उत्तर भारत में, अफगानिस्तान की सीमा तक पूर्व में बंगाल और पश्चिम में मुम्बई और गुजरात तक आर्यसमाज का मजबूत संगठन खड़ा कर दिया जो देशोत्थान के लिये पूर्णतया दृढ़ संकल्पित था। इस धधकती हुई आग को, महर्षि के देहावसान के बाद भी पं. लेखराम, भौतिकी विज्ञान के प्रोफेसर पं. गुरुदत्त विद्यार्थी, स्वामी श्रद्धानन्द, लाला लाजपतराय, शहीदे आज़म भगत सिंह के पूर्वज आदि अन्य अनेक नामी-गिरामी महामानवों ने प्रदीप्त कर रखा।

1857 के प्रथम स्वातंत्र्य संग्राम जिसमें महर्षि अंसदिग्ध रूप से मूकदर्शक बन कर खड़े नहीं रहे होंगे, के 28 वर्ष पश्चात् व महर्षि के देहावसान (1883) के 2 वर्ष बाद सन् 1885 के कलक्टर ए. ओ हयूम ने, ब्रिटिश शासन के विरूद्ध भड़की हुई आग का आकलन कर कांग्रेस पार्टी की स्थापना की। उद्देश्य यही होगा कि प्रबुद्ध, अंग्रेजी पढ़े-लिखे, शांति प्रिय भारतीयों का ऐसा संगठन खड़ा किया जावें जो स्वतंत्रता प्राप्ति के तीव्र संघर्ष को कर, ब्रिटिश सत्ता के अन्तर्गत थोड़ी-बहुत स्वायत्तता को लेकर संतुष्ट हो जावे। ब्रिटिश सत्ता निर्बाध रूप से यथावत् बनी रहे। कांग्रेस पार्टी ऐसा ही संगठन बनी और बनी रही।

सन् 1912 में बैरिष्टर मोहनदास कर्मचन्द गांधी का भारतीय राजनीति में प्रवेश हुआ। 1865 से गणना की जावे तो 1912 तक लगभग 50 वर्ष की अवधि का परिपक्व, कटिबद्ध आर्यसमाजियों का विशाल जनसमूह उन्हें बिना प्रयास किए, सहज ही में मिल गया। महर्षि दयानन्द के शांतिपूर्ण संघर्ष को 'सत्याग्रह' का नाम दिया। नमक कानून के विरोध में 'दाड़ी' यात्रा निकाली। भारत व्यापी ख्याति उन्हें मुफ्त में मिल गई। हाथ आए हथियार 'सत्याग्रह' का जम कर प्रयोग किया महर्षि दयानन्द को सम्पूर्ण रूप में भुला कर प्रचारित किया गया। दे दी हमें आजादी, खड्ग बिना ढ़ाल, साबरसती के सन्त तूने कर दिया कमाल।

कांग्रेस इतिहास के लेखक डा. पट्टाभि सीतार मैया ने पुष्टि की है कि गांधी जी द्वारा संचालित स्वतंत्रता संघर्ष में, 85 प्रतिशत से अधिक आन्दोलनकारी आर्य समाजी थे। इस स्वीकारोवित से स्वत: ही स्पष्ट है कि महर्षि की अल्पायु (58 वर्ष 8 माह 19 दिन) में मृत्यु न हुई होती तो स्वंतत्रता प्राप्ति का लक्ष्य उनके जीवन काल में ही पूरा होता और उसका समस्त श्रेय महर्षि दयानन्द को ही मिलता। यह अंकित करना दूर की कौड़ी फैंकना नहीं है क्योंकि स्वतंत्रता प्राप्ति की अग्नि 1857 के पूर्व से ही जल चुकी थी।

स्वतंत्रता प्राप्ति के प्रश्चात् भारत का संविधान सत्यार्थ प्रकाश के प्रावधानों के अनुसार ही बनता। यही स्थिति तब भी होती जब स्वामी श्रद्धानन्द महाराज आर्य समाजियों के विशाल संगठन का नेतृत्व सभालकर एक अलग राजनैतिक दल बनाने तक सुभाष चन्द्र बोस, लाल बाल, पाल आदि जब ही उन्हें सहयोगी रूप में मिल जाते ओर स्वतंत्रता भी 1947 से पूर्व ही मिलती। प्रथम विश्व युद्ध में ब्रिटिश फौज को भारतीय सैनियों का सहयोग कदापि नहीं मिलता। प्रथम विश्व युद्ध में ब्रिटिश साम्राज्य की कमर टूट चुकी थी बस एक धक्का ही तो देना था।

महर्षि दयानन्द के अनुयायिओं द्वारा स्वतंत्रता संग्राम का नेतृत्व न लेने के कारण एक स्वर्णिम ऐतिहासिक अवसर उनके हाथ से निकल गया जिसकी क्षतिपूर्ति संभव ही नहीं है।

वर्तमान में हमें देखना होगा कि हम कहां है ? महर्षि के समय देश की जनसंख्या 20 करोड़ थी। 120 करोड़ तो आज इस्लाम धर्म के अनुयायी ही हैं। देश की जनसंख्या 125 करोड़ से भी अधिक है। 125 करोड़ का एक प्रतिशत भी वैदिक धर्मी नहीं हैं। इस एक प्रतिशत का कितना प्रतिशत विशुद्ध आर्यसमाजी है, जो महर्षि दयानन्द के मिशन को पूरा करने के लिए कृत-संकल्पित है, अनुमान लगाया जा सकता है। विखण्डन का धुन केन्द्रीय नेतृत्व से लेकर ईकाई स्तर तक लग चुका है, निरन्तर खाए जा रहा है।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

पृष्ठ 2 का शेष-श्रावणी पर्व

प्रत्येक पर्व पर यज्ञ करने का विधान है जिससे यह सभी लाभ यज्ञ कर्ता व उसमें उपस्थित लोगों सहित पड़ोसियों व दूरदेशवासियों को भी प्राप्त हो सकें। श्रावणी के दिन विशेष पर्व पद्धति के अनुसार यज्ञ आयोजित कर इसका लाभ सभी गृहस्थियों को उठाना चाहिये।

श्रावणी पर्व श्रावण मास की पूर्णिमा के दिन मनाया जाता है। हम अपने अनुभव के आधार पर कहना चाहते हैं कि श्रावण मास से आरम्भ कर चार व साढ़े मास तक वैदिक साहित्य का अध्ययन वा स्वाध्याय करना चाहिये, इससे वर्तमान व शेष जीवन सहित परजन्म में भी लाभ होता है, ऐसा सत्शास्त्र बताते हैं। इसके लिए सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादि-भाष्य-भूमिका, संस्कार-विधि, आर्या-भिविनय का अध्ययन कर ऋषि दयानन्द कृत ऋग्वेद व यजुर्वेद भाष्य का स्वाध्याय करना चाहिये। ऋग्वेद के अवशिष्ट भाग व अन्य वेदों पर आर्य विद्वानों के भाष्य का अध्ययन करना जीवन में अभ्युदय व निःश्रेयस में अग्रसर करता है। आर्य विद्वानों ने स्वाध्याय के लिए अनेक ग्रन्थों की रचना की है जिसके अध्ययन से मनुष्य निर्भ्रान्त स्थिति का लाभ प्राप्त करता है। यही जीवन का उद्देश्य भी है। इन्हीं शब्दों के साथ इस लेख को विराम देते हैं।

आर्य समाज नंगल टाऊन शिप का वार्षिक चुनाव

आर्य समाज, नंगल का वर्ष (2017-18) का नया चुनाव, वेदमुनी (श्री साधु राम जी) की देख रेख में हुआ, जिसमें श्री सुरेन्द्र मदान जी को सर्व सम्मति से प्रधान चुना गया और उनको सदस्यों की सहमति से कार्यकारणी गठित करने का अधिकार दिया गया। सूची निम्न प्रकाशित है।

1. श्री हरिमित्र बाली संरक्षक/ सलाहकार 2. श्री सुरेन्द्र रावल संरक्षक सलाहकार 3. श्री ओ. पी. खन्ना संरक्षक/ सलाहकार 4. श्री ऐ. डी. सरदाना संरक्षक/सलाहकार 5. श्रीमति कान्ता भारद्वाज संरक्षक/ सलाहकार

1. श्री सुरेन्द्र मदान-प्रधान 2. श्री प्रेम सागर उप-प्रधान, 3. श्री जी. सी. तलूजा-उप-प्रधान 4. श्री हरिन्द्र भारद्वाज-उप-प्रधान 5. श्री सतीश अरोड़ा-मन्त्री 6. श्रीमति नरेश सहगल-उप-मन्त्री 7. श्री पंकज खन्ना-उप-मन्त्री 8. श्री अमर नाथ शर्मा-कोषाध्यक्ष 9. श्री एन. के. शर्मा-ऑडीटर 10. श्री सत पाल जौली-प्रचार मन्त्री 11. श्री मन्जुल शर्मा-प्रचार मन्त्री 12. श्रीमति आंचल-पुस्तकाध्यक्ष।

कार्यकारणी सदस्य 1. श्री अशोक बाली 2. श्री राज खन्ना 3. श्री सक्ता सिंह 4. वेद मुनी (श्री साधु राम जी) 5. श्री अशोक भाटिया 6. श्री प्रेम प्रकाश 7. श्री राजीव खन्ना 8. श्री किरन सेठ 9. श्री दीवान चन्द शर्मा 10. श्री करन खन्ना 11. श्री सुरेन्द्र शास्त्री 12. श्रीमति आशा अरोड़ा 13. श्रीमति विनी रावल 14. श्रीमति उषा ठाकुर 15. श्रीमति स्नेह लता पाठक।

-सतीश अरोड़ा

आर्य समाज नई मण्डी में अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया

दिनांक 21 जून 2017 को संयुक्तराष्ट्र महासभा द्वारा घोषित **अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस,** आर्यसमाज, नई मण्डी, मुजफ्फरनगर में समारोहपूर्वक मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ विश्व कल्याण की कामना के साथ वेदमन्त्रों से देवयज्ञ के साथ किया गया। यज्ञ के यज्ञमान श्री अमोदकुमार आर्य सपत्नीक रहे। पतंजलि योगपीठ से पधारे प्रसिद्ध योगाचार्य ब्रह्मचारी सत्यदेव ने अपने साथी योगाचार्य के साथ कई योगासन जिनमें-भस्त्रिका, रेचक-कुम्भक प्राणायाम, ओ३म् (प्रणव) जप व प्राणायाम् के साथ ओ३म् उच्चारण आदि की कई प्रभावी क्रियाऐं कराते हुए योग के भौतिक व आध्यात्मिक लाभों पर प्रकाश डाला। ब्रह्मचारी योगाचार्य श्री सत्यदेव व उनके साथी का उनकी विशिष्ट सेवाओं के लिये आर्यरत्न आचार्य गुरूदत्त आर्य ने शाल ओढ़ाकर व सम्मान राशि प्रदान कर सम्मान किया। श्री आर्य ने अपने सम्बोधन में प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी व यू. एन. ओ. का योग को विश्वभर में स्थापित करने के भागीरथ प्रयत्न के लिए धन्यवाद करते हुए कहा कि योग और वेद विद्या से हमारे ऋषियों व योगाचार्यों ने यम-नियम के साथ सात्विक आहार-व्यवहार से 300-400 वर्षों की आयु प्राप्त कर स्वस्थ रहकर विश्व कल्याण का मन्त्र मनुष्यमात्र को दिया।

-आर. पी. शर्मा मंत्री

पृष्ठ 6 का शेष-महर्षि सत्यार्थ प्रकाश...

लोग कहेंगे कि आर्यसमाज का तो विस्तार स्पष्ट दिखाई दे रहा है और मुझे अंग्रेजी का एक मुहावरा याद आ रहा है- All that glitter is not gold. प्रत्येक चमकीला पदार्थ सोना नहीं होता। विस्तार में मिशनरी भावना से कार्य करने वाले कितने है? और ब्रहत्तर आर्यसमाज में उनकी वैल्यु क्या है?

ईसाई, मुसलमान, सिख व जैन धर्म (मत) के अनुयायी जन्म से ही अपने धर्म की घुट्टी पिए होते हैं। क्या आपने गुरुद्वारों में अबोध बालक-बालिकाओं को 'मत्था टेकते' हुए नहीं देखा है ? क्या आपने दुपल्ली लगाए छोटे-छोटे मुस्लिम बच्चों को जुमे (शुक्रवार) की नमाज में जाते हुए नहीं देखा है? जैन साधुओं के सत्संग में आबालवृद्ध समाज उमड़ा पड़ता है। ऐसे संस्कारित किसी भी क्षेत्र में व्यक्ति सफलता के उच्चतम शिखर पर हों तब भी धर्म के सम्बन्ध में 'तर्क' करेंगे ही नहीं और यदि आपसी कुछ तर्कसम्मत बातें सुन ली, समझ भी लीं पर जीवन में अपनाऐंगे। कभी भी नहीं। बताइए, कभी आपने देखा हो, मैंने तो पिछले साठ साल में नहीं देखा, कोई ईसाई, मुसलमान सिख व जैनी या पौराणिक भी, आर्यसमाज में आया हो और कहा हो कि हमारे धर्म में ईश्वर की वह अवधारणा नहीं है जो वेदोक्त ईश्वर में बताई जाती है इसलिये हम अपना धर्म त्याग कर वैदिक धर्म स्वीकार करते हैं।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम का जयघोष कितना भी गला फाड़ कर लीजिये, विश्व को क्या पड़ौसी अरे ! घर वालों को हीं आर्य बना कर दिखा दीजिए। अपवाद की बात मत कीजिए।

फिर महर्षि के मिशन का सपना कैसे पूरा होगा ? निराश होने से काम नहीं चलने का। आर्यवीर दल, डी.ए.वी. स्कूल व कालेज तथा गुरुकुल अभी भी आशा का केन्द्र बने हुए है। गुरुकुल शिक्षा में जब तक, विज्ञान, तकनीकी शिक्षा का माध्यम, मातृभाषा या संस्कृत न हो तब तक यह शिक्षा अंग्रेजी माध्यम से दी जानी चाहिए। अंग्रेजी में पांरगत न होने के कारण हजारों उत्तर भारतवासी मल्टीनेशनल कम्पनियों में जॉब नहीं पा पाते। कामर्स विषय की शिक्षा भी अंग्रेजी माध्यम से दी जानी चाहिए। संभ्रान्त परिवार के बच्चे तभी गुरुकुलों को मिलेंगे। यौवनावस्था में नहीं तो वृद्धावस्था में ही सही ये ही आर्यजन आर्यसमाजों में रविवारीय सत्संगों में दिखलाई पड़ेंगे अन्यथा लिंक के मजबूत ताले।

यह टिप्पणी शिवकर बापूजी तलपदे ने 1885 में वायुयान उड़ान का परीक्षण मुम्बई के चौपाटी तट पर किया था। प्रत्यक्षदर्शियों में बडादा नरेश महाराजा सयाजीराव गायकवाड़, जस्टिस महादेव गोविन्द, रानाडे, लाल जी नारायण आदि प्रतिष्ठित सज्जत उपस्थित थे।

श्री तलपदे जे.जे स्कूल ऑफ आर्टस में शिक्षक थे। उन्होंने स्वामी दयानन्द सरस्वती कृत ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका, ऋग्वेद एवं यजुर्वेद ग्रन्थों का अध्ययन कर प्राचीन भारतीय विमान विद्या पर कार्य करने का निर्णय लिया। इसके लिये उन्होंने संस्कृत भाषा सीख कर वैदिक विमान विद्या पर कार्य किया। श्री तलपदे आर्यसमाज काकड़वाड़ी के सदस्य थे।

श्री तलपदे के विमान उड़ान परीक्षण के आठ (8) वर्ष बाद 17 दिसम्बर 1903 को राइट ब्रदर्स ने उड़ान परीक्षण किया था। लेकिन अंग्रेजी भी गुलामी के दिनों में और गुलामी के बाद भी भारत में, और विश्वभर में यही पढ़ाया जाता है कि विमान उड़ान परीक्षण विश्व में सबसे पहिले राइट ब्रदर्स ने ही किया था। वैदिक धर्मी विद्वानों से पिछले साठ सत्तर साल में यह बात मैंने नहीं सुनी कि तलपदे जी ने विश्व में सबसे सफल विमान उड़ान परीक्षण किया और उनके प्रेरणा स्त्रोत महर्षि दयानन्द थे।

रजि. नं. पी.बी./जे.एल–011/2015–17 RNI No. 26281/74

वेदवाणी

इन्द्रियों की चञ्चलता भक्ति में बाधक

वि मे कर्णा पतयतो वि चक्षुः वी३दं ज्योतिर्हृदय आहितं यत्।
वि मे मनश्चरति दूर आधीः किं स्विद् वक्ष्यामि किमु नू मनिष्ये।।
–ऋ०६।९।६

ऋषि–**भारद्वाजो बार्हस्पत्यः**।। देवता–**वैश्वानरः**।। छन्दः–**त्रिष्टुप्**।।

विनय–हे प्रभो ! मैं चाहता हूँ कि बिल्कुल एकाग्र होकर अपनी मानसिक वाणी द्वारा तेरा नाम जपूँ या तेरा मनन करूँ, तेरा ध्यान करूँ, परन्तु जब मैं ऐसा करने के लिए बैठता हूँ तो कुछ भी शब्द सुनाई पड़ते ही मेरे कान यहाँ–वहाँ दौड़े जाते हैं, आँखों के सामने कुछ भी आते ही मैं यहाँ–वहाँ देखने लगता हूँ। कभी कान कुछ सुनने लगते हैं, कभी आँखें कुछ देखने लगती और यदि मैं किसी ऐसे स्थान पर जाकर बैठता हूँ जहाँ शब्द और रूप आ ही न सकें, तो भी मैं देखता हूँ कि मेरा मन अन्दर–ही–अन्दर सब–कुछ देखता–सुनता रहता है। दिन–रात की किसी बात का स्मरण आते ही मन यहाँ–वहाँ भाग जाता है और इधर–उधर की बातें सोचने लगता है। तब पता लगता है कि मेरा मन कितनी दूर पहुँचा हुआ है और यदि किसी दिन कोई मन पर चोट लगने वाली बात हो चुकी होती है तब तो मन बार–बार वहीं पहुँचता है–रोकने का बड़ा यत्न करने पर भी क्षण–क्षण में वहीं जा पहुँचता है। मेरे हृदय में जगने वाली यह ज्योति भी–जो वातरहित स्थान में रखे हुए दीपक की शिखा की भाँति बिल्कुल अनिङ्गित, बिल्कुल न हिलती हुई, एकरस जलती हुई रहनी चाहिए–वह ज्योति, वह ज्ञान–ज्योति भी सदा इधर–उधर हिलती रहती है, मनोवृत्तियों की हवा लगते रहने से हिलती रहती है। तो फिर मैं तेरा ध्यान कैसे कर सकता हूँ ? एकाग्रता से तेरा नाम कैसे जपूँ ? तेरा मनन कैसे करूँ ? और यदि प्रतिदिन तेरा इतना भी भजन न कर सकूँगा तो उस दिन, जबकि मेरी यह जीवनसाधना समाप्त होगी, उस दिन तुम्हें क्या उत्तर दूँगा ? तुम्हारे सामने किस बात का अभिमान कर सकूँगा ? यह जीवन, ये सब ज्ञानेन्द्रियाँ और कर्मेन्द्रियाँ, तुमने मुझे तुम्हारे समीप पहुँचने की साधना ही के लिए दी हैं। तो उस दिन, जब तुम यह शरीर वापस माँगोगे, तब मैं तुम्हें क्या उत्तर दूँगा ? क्या मुँह दिखलाऊँगा ? हे प्रभो ! शक्ति दो कि मेरे मन की आज्ञा के बिना मेरे ये कान, आँख आदि कहीं न जा सकें और यह मन भी हृदय की ज्योति के साथ मिल जाया करे–ज्योति एक–रस जगती रहे। ऐसी अवस्था दिन में दो बार सन्ध्योपासना के समय हो जाया करे, नहीं तो मैं क्या मुँह दिखाने लायक रहूँगा ?

विचार गोष्ठी का आयोजन

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के नशा मुक्त पंजाब के कार्यक्रम को आगे बढ़ाते हुए आर्य सीनियर सैकेण्डरी स्कूल बस्ती गुजां जालन्धर में दिनांक 17 जुलाई 2017 को दोपहर 12:30 से 2:00 बजे तक एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है। इस विचार गोष्ठी की अध्यक्षता आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी करेंगे। मुख्य अतिथि के रूप में श्री सुशील रिन्कु जी एम.एल.ए. तथा श्री अशोक परूथी जी रजिस्ट्रार आर्य विद्या परिषद पंजाब उपस्थित होंगे। इस विचार गोष्ठी के मुख्य वक्ता श्री विवेक जोशी जी तथा श्री सरदारी लाल जी आर्य होंगे। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के कोषाध्यक्ष श्री सुधीर शर्मा जी विशेष रूप से पधारेंगे। आप सभी से निवेदन है कि आप इस अवसर पर अपने परिवार के साथ पधारने की कृपा करें।

सुदेश कुमार मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

गुरुकुल का आयुर्वेद महान
घर-घर में मिले रोगों से निदान

गुरुकुल च्यवनप्राश
सभी के लिए स्वादिष्ट, रुचिकर, पौष्टिक रसायन।

गुरुकुल पायोकिल
पायोरिया की आयुर्वेदिक औषधि
दांतों में खून रोके, मुंह की दुर्गन्ध दूर करे, मसूड़ों के रोग, ढीले दांत ठीक करे।

गुरुकुल शतशिलाजीत सूर्यतापी
पुष्टीदायक, बलवर्धक
शरीर में नया खून और उत्साह का अनुभव

गुरुकुल ब्राह्मी रसायन
बुद्धिवर्धक, स्फूर्तिदायक, दिमागी कमजोरी दूर करे।

गुरुकुल मधुमेह नाशिनी गुटिका
मधुमेह एवं प्रत्येक प्रकार के प्रमेह में लाभदायक

गुरुकुल मधु
गुणवत्ता एवं ताज़गी के लिए

गुरुकुल चाय
खाँसी, जुकाम, इन्फ्लूएंजा व थकान में अत्यंत उपयोगी।

अन्य प्रमुख उत्पाद
गुरुकुल द्राक्षारिष्ठ
गुरुकुल रक्तशोधक
गुरुकुल अश्वगंधारिष्ट

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार डाकघर : गुरुकुल कांगड़ी-249404, ज़िला-हरिद्वार (उत्तरांचल) फोन : 0134-416073

शाखा कार्यालय : 63, गली राजा केदार नाथ, चावड़ी बाज़ार, दिल्ली–6, फोन : 23261871

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा गायत्री प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com, www.aryapratinidhisabha.org
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।